पाठ-1

प्रार्थना

तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो,
तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो॥
तुम्हीं हो साथी तुम्हीं सहारे
कोई न अपना सिवा तुम्हारे।
तुम्हीं हो नैया तुम्हीं खिवैया
तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो॥
जो खिल सकेंगे वे फूल हम हैं
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं
दया की दृष्टि सदा ही रखना
तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो॥

Scanned with CamScanner

अभ्यास

1. इस गीत को कण्ठस्थ कीजिए।
2. वह कौन है जिसे इस प्रार्थना में माता, पिता, बन्धु और सखा बताया गया है?
3. 'कोई न अपना सिवा तुम्हारे' का क्या भाव है?
4. 'खिवैया' का अर्थ बताइए।
5. 'जो खिल सकेंगे, वो हम हैं' का क्या तात्पर्य है?

Scanned with CamScanner

ता, पिता, बन्धु और

ा भाव है?

तात्पर्य है?

। मूर्ख को
धन बनाती

पाठ-2

ओंकार परिचय

ओ३म् भगवान् का निज नाम है।
इस नाम में तीन अक्षर हैं—अ उ म्।
अ बोलते समय मुख खुलता है।
उ बोलते समय मुख खुला रहता है।
म् बोलते समय मुख बन्द हो जाता है।
भगवान संसार को बनाता है।
वह संसार की पालता है।
वही संसार को समाप्त कर देता है
'अ' का अर्थ है – बनाना।
उ का अर्थ है – पालन करना।
म् का अर्थ है—समाप्त कर देना।
भगवान् यह तीनों काम करता है।
क्योंकि वह ओ३म् है।
ओ३म् ही हम सबका रक्षक है।
हमें ओ३म् नाम जपना चाहिए।

अभ्यास

शुद्ध वाक्य पर सही(√) और अशुद्ध पर गलत (×) का चिह्न लगाइए।

(1) ओ३म् भगवान का निज नाम है। (✓)
(2) ओ३म् चार अक्षरों से बना है। (×)
(3) 'अ' का अर्थ उत्पन्न होना है। (×)
(4) 'म्' का अर्थ जीवित रहना है। (×)
(5) ईश्वर हमारी रक्षा करता है। (✓)

Scanned with CamScanner

पाठ-3

ओ३म् की महिमा

ओ३म् ही जीवन हमारा,
ओ३म् प्राणाधार है।
ओ३म् है कर्ता विधाता,
ओ३म् पालनहार है ॥1॥
ओ३म् है दुख का विनाशक,
ओ३म् सर्वानन्द है।
ओ३म् है बल तेज धारी,
ओ३म् करुणाकन्द है ॥2॥
ओ३म् सबका पूज्य है,
हम ओ३म् का पूजन करें।
ओ३म् ही के ध्यान से,
हम शुद्ध अपना मन करें ॥3॥
ओ३म् के गुरुमन्त्र जपने
से रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ेगी
धर्म में होगी लगन ॥4॥
ओ३म् के जप से हमारा,
ज्ञान बढ़ता जाएगा॥
अन्त में यह ओ३म् हमको
मोक्ष तक पहुँचाएगा ॥5॥

Scanned with CamScanner

अभ्यास

नीचे लिखे शब्दों में से प्रश्नों के सामने दिए कोष्ठक में उत्तर लिखिए—

(ओ३म्, बुद्धि, मन, ज्ञान, सबका)

(1) ओ३म् किसका पूज्य है? (सबका)

(2) ओ३म् के जप से हमारा क्या बढ़ता जाएगा? (ज्ञान)

(3) ओ३म् के ध्यान में हम अपना क्या शुद्ध करें? (मन)

(4) ओ३म् जाप से दिन प्रतिदिन क्या बढ़ेगी? (बुद्धि)

(5) अन्त में हमें मुक्ति तक कौन पहुँचाएगा? (ओ३म्)

दया धर्म का मूल है,
पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए,
जब लग घट में प्राण।

Scanned with CamScanner

पाठ-4

ओंकार का लेखन और उच्चारण

(रंग भरा हुआ)

(रंग भरने के लिए स्कैच)

(1)
(2)
(3)

Scanned with CamScanner

पाठ-5

गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

अर्थगान

तूने हमें पैदा किया,
पालन सदा करता है तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम
दुखियों के दुःख हरता है तू ॥1॥

तेरा महान् तेज़ है
छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में
सर्वत्र तू है विद्यमान ॥2॥

तेरा ही धरते ध्यान हम,
और माँगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को
तू श्रेष्ठ मार्ग पर चला ॥3॥

अभ्यास

वाक्य के आगे कोष्ठक में सही (√) या गलत (×) का चिह्न लगाइए–

(1) ईश्वर ने हमें उत्पन्न नहीं किया है। (×)
(2) ईश्वर का तेज़ सभी स्थानों पर छाया हुआ है। (√)
(3) हम बड़े लोगों की दया माँगते हैं। (×)
(4) ईश्वर हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चलाता है। (√)
(5) तू (प्रभु) दुखियों के दुःख हरता है। (√)

Scanned with CamScanner